६१. हम तो कबहुँ न निज घर आये .....

पर घर फिरत बहुत दिन बीते, नाम अनेक धराये।।हम तो. ।।
परपद निजपद मानि मगन ह्वै, पर परनति लपटाये।
शुद्ध बुद्ध सुखकंद मनोहर, आतम गुण नहिं गाये।।हम तो. ।।१ ।।
नर पशु देव नरक निज मान्यो, परजयबुद्ध लहाये।
अमल अखंड अतुल अविनाशी, चेतन भाव न भाये।।हम तो. ।।२ ।।
हित अनहित कछु समझ्यो नाहीं, मृगजलबुध ज्यों धाये।
'द्यानत' अब निज-निज, पर-पर है, सद्गुरु वैन सुनाये।।हम तो. ।।३ ।।